International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत में सेवा क्षेत्र और इसका भविष्य-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ महेंद्र कुमार खारड़िया

सहायक आचार्य , लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी, राजकीय लोहिया महाविद्यालय चुरु (राजस्थान)

सारांश (Abstract)

हाल ही के वर्षों में देश के अंदर इस बात पर बहस होती रही है कि कौन सा प्रक्षेत्र वृद्धि प्रक्रिया का नेतृत्व कर सकता है। इस बहस के पीछे यह तथ्य रहा है कि वर्ष 2001-2012 के दशक में सेवा क्षेत्र ने देश की सकल घरेलू आय (जीडीपी) में 62% का योगदान दिया था। अब इस बहस का आर्थिक सर्वेक्षण 2014-15 में एक तरह से हल प्रदान किया है जिसमें कहा गया है कि विनिर्माण क्षेत्र ही वृद्धि का नेतृत्व कर सकता है। सर्वेक्षण में कतिपय अनुभाविक अध्ययन का हवाला देते हुए सेवा क्षेत्र को निर्माण क्षेत्र से जोड़ने की बात कही गई जिससे अनेक वास्तविक मुद्दों का समाधान हो सकता हैं। अपने सेवा क्षेत्र के आकार और गतिशीलता के लिए भारत अग्रणी है भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का योगदान कई गुना रहा है सकल घरेलू उत्पाद में इसका हिस्सा 55.2% है और लगातार 10% की वार्षिक दर से बढ़ रहा है कुल रोजगार में लगभग एक चौथाई का योगदान दे रहा है, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इनफ्लो में काफी अच्छा हिस्सा है और कुल निर्यात का लगभग एक तिहाई योगदान सेवा क्षेत्र का है। इस शोध पत्र में भारत में सेवा क्षेत्र के बारे में विस्तृत अध्ययन करके इसके भविष्य के बारे में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है ताकि रोजगार के लिए सेवा क्षेत्र कितना कारगर है ।

मुख्य बिंदु (Key Words) सेवा क्षेत्र, भारतीय अर्थव्यवस्था, सेवाएं, व्यापार

प्रस्तावना (Introduction)-

अर्थव्यवस्था का वह क्षेत्र जो सेवा से संबंधित कार्यों में लगा हुआ है सेवा क्षेत्र कहलाता है सेवा क्षेत्र में मुख्य रूप से शामिल होने वाली सेवाएं इस प्रकार से हैं परिवहन कूरियर सूचना क्षेत्र की सेवाएं, प्रतिभूतियां, रियल एस्टेट, होटल एवं रेस्टोरेंट, वैज्ञानिक और तकनीक सेवाएं, अवशिष्ट प्रबंधन, स्वास्थ्य कल्याण और सामाजिक सहायता तथा कला और मनोरंजन सेवाएं इत्यादि आती है।

यह क्षेत्र भारतीय सकल घरेलू उत्पाद में करीब 60% का योगदान देता है इसे अर्थव्यवस्था के तीसरे क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है। हर अर्थव्यवस्था के तीन क्षेत्र होते हैं जो इस प्रकार है प्राथमिक क्षेत्र (जैसे खनन, कृषि और मछली पालन) द्वितीयक क्षेत्र(निर्माण) और तृतीयक क्षेत्र(सेवा क्षेत्र) विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था के विकास के ट्रेड का अध्ययन करने के बाद पता चलता है कि जो विकास की राह पर आगे बढ़ते हैं उन देशों की अर्थव्यवस्था कृषि क्षेत्र से हटकर सेवा क्षेत्र की तरफ बढ़ रही है अर्थात उन देशों की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का योगदान बढ़ता जा रहा है और कृषि क्षेत्र का योगदान घटता जा रहा है भारत में देखे तो तथ्य देखने को मिलते हैं कि 1951 में भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान 51% था जो वर्तमान में केवल 14% के लगभग है।

भारत के सेवा क्षेत्र में न केवल अन्य पर क्षेत्र उद्योग एवं कृषि को पीछे छोड़ दिया है बल्कि इसने विश्व व्यापार और पूंजी बाजारों से भारत को जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में सेवा क्षेत्र का उदारीकरण एक विषम चुनौती थी खासकर कुछ अप प्रक्षेत्रों में लेकिन स्वाभाविक रूप में उन सेवाओं को जहां की व्यापार तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अधिक हुआ है वृद्धि अधिक देखी गई है और इसका सकारात्मक प्रभाव अर्थव्यवस्था के शेष क्षेत्रों पर भी हुआ है।

हालांकि सेवा वृद्धि के सतत बने रहने के बारे में चिंता हमेशा रहती है जो की कौशल आधारित सेवाओं के निर्यात से पैदा होती है वर्तमान में सेवा क्षेत्र के संबंध में धारणा है कि यह पर क्षेत्र बाह्य मांग पर निर्भर नहीं रह सकता। यह आंतरिक मांग से भी 40 प्रतिशत होना चाहिए। सेवाओं के अंदर व्यापक आधार की जरूरत है जिससे कि अधिक संतुलित समत्व पूर्ण एवं रोजगारोन्मुख वृद्धि सुनिश्चित की जा सके और इसके शेष अर्थव्यवस्था का अग्रगामी और पश्चगामी में संबंध स्थापित किया जा सके।

इस संबंध में सेवा क्षेत्र में और अधिक रचनात्मक और नियामक सुधारो तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) उदारीकरण के द्वारा भारत के सेवा प्रक्षेत्र में वृद्धि के स्रोतों को विविधता प्रदान करने तथा जरूरी गति प्रदान करने में मदद मिलेगी।

अध्ययन के उद्देश्य (objectives of study)

1. भारत में सेवा क्षेत्र के बारे में विस्तार से अध्ययन करना।
2. भारत में सेवा क्षेत्र के भविष्य के बारे में विस्तृत अध्ययन करना।
3. भारत के सेवा क्षेत्र का भारत की अर्थव्यवस्था में योगदान का विस्तृत अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन(Review of literature)

वर्ष 2020-21,आर्थिक समीक्षा के नेस्काम अंनतिम प्रक्लनओ के अनुसार 2020-21 के दौरान आइटीबीपीएम राजस्व ई-कॉमर्स के अतिरिक्त वर्ष दर वर्ष 2. 26% से बढ़कर 1. 38 लाख कर्मचारियों को जोड़ते हुए 194 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया। समीक्षा में कहा गया है कि आइटीबीपीएम क्षेत्र के अंतर्गत आईटी सेवाओं की प्रबल हिस्सेदारी 51% है।

आर्थिक समीक्षा 2021-22 में सेवा क्षेत्र के बारे में कॉविड की पहली लहर के दौरान लगे राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन और दूसरी कोविड लहर के दौरान लगे स्थानीय लॉकडाउन के प्रभाव से संपूर्ण रूप में सेवा क्षेत्र ज्यादातर उबर चुका है 2021-22 में सेवाओं के GVA मे ें की व ृद्धि होने की उम्मीद थी।

भारतीय अर्थव्यवस्था के लेखक रमेश सिंह ने सेवा क्षेत्र के बारे में विस्तार से बताया कि भारत के सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का योगदान 50% से अधिक है जबकि कोविड-19 महामारी का अर्थव्यवस्था के अधिकांश क्षेत्र ों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है इसमें सेवा क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुआ क्योंकि भारत के GVA में इसकी हिस्सेदारी 2019-20 में 55 प्रतिशत से घटकर 2021-22 में 53% हो गई।

भारत में सेवा क्षेत्र का परिचय(Introduction of Service Sector in India)

भारत में सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर आर्थिक विकास के पारंपरिक मॉडलों में छलांग लगाने का एक अनूठा उदाहरण है। स्वतंत्रता के बाद से 50 वर्षों की छोटी अवधि के भीतर, देश के सकल घरेलू उत्पादन में भारत में सेवा क्षेत्र का योगदान 60% से अधिक हिस्सा है। सोलंकी यह अभी केवल 25 प्रतिशत श्रम शक्ति को रोजगार देता है नतीजतन कृषि जो स्थिर है और विनिर्माण(जो अभी तक अपनी पूरी क्षमता तक नहीं बड़ी है) हमारी नियोजित आबादी के बहुमत को बनाए रखती है यह भारत में भविष्य के आर्थिक विकास के लिए अनूठी चुनौती प्रस्तुत करता है और इसके लिए लेख से हटकर समाधान की आवश्यकता है जो भारत में सेवा उद्योग की क्षमता का तेजी से द ोहन करने में मदद करेगा।

भारत में सेवा क्षेत्र का विश्लेषण(Analysis of Service Sector in India)

भारत में जो सेवा क्षेत्र सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं उनकी सूची इस प्रकार है जो प्रदर्शित करते हैं और साथ ही साथ भविष्य के लिए मजबूत क्षमता प्रदर्शित करते हैं।

* आई. टी.बी.पी.एम सेवाएं(IT BPM services) सूचना तकनीक एवं बिजनेस प्रोसेस मैनेजमेंट (IT BPM) पिछले 20 वर्षों से भी अधिक भारत के निर्यात का ध्वज वाहक रहा है। इन दो दशकों में जहां पहले दशक 1999 से 2010 इसका व ृद्धि क ाल था। वही ं दूसरे 10 इसके समेकन एवं राजस्व तथा कार्मिकों की वृद्धि के उपयुउग्मन की अवधि

रही। नैटकाम के आंतरिक अनुमान के अनुसार वर्ष 2020-2021 में इस क्षेत्र का राजस्व 194 अरब डालर पहुंच गया ई-कॉमर्स को छोड़कर जो दो पॉइंट 26 प्रतिशत की वृद्धि कर दर्शाता दर्शाता है साथ ही 1. 38 लाख नए रोजगार उत्पन्न हुए।

*स्वास्थ्य सेवाएं और पर्यटन -स्वास्थ्य सेवा उद्योग का वर्तमान योगदान 110 विलियन से अधिक है। और 2020 तक 280 बिलियन तक पहुंचाने की उम्मीद थी। विश्व स्तरीय चिकित्सा सुविधाओ , कुशल डॉक्टरों ,तकनीकियों और फार्मास्यूटिकल की उपलब्धता हमारे फायदेमंद हैं। डिजिटल संचार और इंटरफेस के साथ डायग्नोस्टिक मेडिसिन को वैश्विक ग्राहक के लिए एक सेवा के रूप में टैप किया जा सकता है।

इस प्रकार पर्यटन की दृष्टि से भी भारत अपने प्राकृतिक सौंदर्य एवं ऐतिहासिक महत्व के स्थान के लिए प्रसिद्ध है। पर्यटन विश्व में चीन के 115 अरब डॉलर की तुलना में देश केजीडीपी में 47 अरब डॉलर का योगदान देता है। इस प्रकार पर्यटन में अगले दशकों में भारतीय सेवा क्षेत्र को बढ़ाया जाने की अपार संभावना है। महत्वपूर्ण राजस्व आकर्षित करने के लिए बेहतर ग्राहक अनुभव चिकित्सा एवं पर्यटन प्रमुख कारक है जो इसके भविष्य के विकास को निर्धारित करेगा इस संदर्भ में ई विजा बेहतर बुनियादी ढांचा सुविधा ,सुरक्षा कनेक्टिविटी आदि जैसी सरकारी पहल सही दिशा में सहायक है।

अंतरिक्ष क्षेत्र-भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम ने पिछले 50 वर्षों में तेज गति से प्रगति की है साधारण मानचित्रण सेवाओं से प्रारंभ करके इसने ने आज वैश्विक स्तर की सफलता प्राप्त की है तथा डिजिटल प्रक्रियाओ में संलग्न है। यथा प्रक्षेपण यानो की डिजाइनिंग से उनके दूरसंचार एवं ब्रॉडबैंड सेवाएं , नौवहन ग्रहों का अध्ययन, अनुसंधान एवं विकास इत्यादि भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र के वर्तमान परिदृश्य के बारे में बात करें तो भारत द्वारा 2019-20 में अंतरिक्ष कार्यक्रमों पर कुल 1.8 अरब अमेरिकी डॉलर का व्यय किया है लेकिन अब भी विश्व के अग्रणी देश की तुलना में काफी कम है (यू एस ए एवं चीन ने 2019 में अपने अंतरिक्ष कार्यक्रमों पर भारत से क्रमशः 10 गुणा और 6 गुणा अधिक व्यय किया है)। वर्तमान में वैश्विक अंतरिक्ष क्षेत्र बड़े बदलाव के दौर से गुजर रहा है विश्व की सरकारी जहां राष्ट्रीय जरूरत से जुड़ी अंतरिक्ष गतिविधियों को प्राथमिकताएं दे रही है वहीं निजी क्षेत्र इससे जुड़ी उन गतिविधियों में संलग्न है जिसे वाणिज्यिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। अधिकांश देशों द्वारा अंतरिक्ष व्यय का उपयोग राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में भी बढ़ चढ़कर किया जा रहा है।

रसद और परिवहन भारत की प्राकृतिक तटरेखा और विशाल नदी नेटवर्क इसे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर परिवहन और रसद सेवाएं प्रदान करने में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त देता है। इन्हें पोर्ट और पोर्ट सेवाओं, वेयरहाउसिंग ट्रांस शिपमेंट सेवाओं, ई लॉजिस्टिक्स, माल और यात्रियों के लिए अंतर्देशीय जलमार्ग, एक्सप्रेसवे और डेडिकेटेड फ्रंट कॉरिडोर में वर्गीकृत किया जा सकता है। भारत का रसद सेवा क्षेत्र 2032 तक 115 अरब डॉलर से 360 अरब डालर तक बढ़ाने की उम्मीद है।

निरंतर बड़े पैमाने पर निवेश की क्षमता और आवश्यकता को देखते हुए भारत को सेवा उद्योग के विकास पर बारीकी से ध्यान देना चाहिए। निवेश की आमतौर पर लंबी अवधि होती है अलंकी एक बार बुनियादी ढांचा तैयार हो जाने के बाद अर्थव्यवस्था के बाकी हिस्सों से जुड़ाव महत्वपूर्ण गुणक प्रभाव प्रदान करता है उदाहरण के लिए मुंबई पुणे एक्सप्रेसवे और पुणे में सेवा उद्योगों का विकास।

अन्य सेवाओं -मीडिया और मनोरंजन ,(एनीमेशन, गेमिंग, डबिंग) शिक्षा (एम ओ ओ सी जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म), और खेल (आईपीएल ,आईएफएल, खेल प्रबंधन), कानूनी फेर लीगल सेवाएं जोखिम प्रबंधन और सलाहकार कार्य आदि ऐसे क्षेत्र है जो आगे बढ़ सकते हैं भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा सेवा उद्योग का बहुत बड़ा योगदान है।

भारत में सेवा क्षेत्र के भविष्य की संभावनाएं

भविष्य की ओर भारत में सेवा क्षेत्र की बहुत ही बेहतरीन संभावनाएं हैं आज भारत सॉफ्टवेयर सेवाओं के निर्यात का एक वैश्विक केंद्र है तथा इसके आईटी आउटसोर्सिंग बाजार के 2021 से 25 के बीच 6 से 8% की दर से वृद्धि की संभावना है इसमें सिर्फ घरेलू स्वास्थ्य उद्योग सेवाओं का आकार वर्ष 2025 तक बढ़कर 10 अरब अमेरिकी डॉलर का हो जाने का अनुमान है। सरकार के अनुसार देश का सेवा क्षेत्र अभी भी अपनी क्षमता का ईष्टतम दोहन नहीं कर पाया है कॉविड-19 के बाद का विश्व काफी बदला हुआ होगा जब शिक्षा मनोरंजन स्वास्थ्य कार्यशैली सभी क्षेत्रों में बाहरी बदलाव आने की संभावना है सेवा क्षेत्र को इसे एक अवसर के रूप में देखने की आवश्यकता है इस मामले में सेवा उद्योग के घरेलू और वैश्विक स्तर पर भारत सेवा क्षेत्र में बहुत आगे जाने की अपार संभावनाएं दिखाई दे रहे हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

भारत के सेवा क्षेत्र में अन्य सभी क्षेत्रों की तुलना सबसे अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध है और इस प्रकार भारी वृद्धि की संभावना के साथ-साथ अत्यधिक नौकरी देने की क्षमता सेवा क्षेत्र में है जिससे राजस्व का सृजन हो सकता है। रोजगार सृजन की चुनौतियों का समाधान करने के लिए, स्किल इंडिया कार्यक्रम का लक्ष्य भविष्य में अधिक से अधिक लोगों को कौशल प्रदान करना है इसका लक्ष्य मुख्य रूप से कौशल विकास कार्यक्रमों में निजी क्षेत्र की फ़ाइल को बढ़ावा देना और उन्हें कौशल प्रदान करना इस तरह मेक इन इंडिया कार्यक्रम भी निर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देने का प्रयास करते हुए सेवा क्षेत्र के पोर्टफोलियो में कई गुना प्रभाव डालेगा इसी संदर्भ में स्टार्टअप इंडिया फेल भारत में वीर निर्माण और सेवा उद्योगों दोनों के लिए एक प्रमुख प्रवर्तक है नवोन्मेष स्टार्टअप को समर्थन देने की पेशकश है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. आर्थिक समीक्षा 2020-21, नई दिल्ली वित्त मंत्रालय भारत सरकार।
2. आर्थिक समीक्षा 2021-22 नई दिल्ली वित्त मंत्रालय भारत सरकार।
3. रमेश सिंह, भारतीय अर्थव्यवस्था,mc Graw Hill education India private limited Chennai
4. इंडिया डेवलपमेंट रिपोर्ट 2015(New Delhi Oxford University press 2015
5. Economic survey 2023-23, New Delhi ministry of finance Gol
6. Economic survey 2019-20 ,New Delhi ministry of finance Gol
7. India Brand equity foundation https://www.ibef.org
8. संपादकीय इन्वेस्ट इंडिया आउटलुक में 2019